मेरे सपने

('कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा' पत्र के साहित्यिक विभाग के प्रबन्धक से. त्रेगुब के साथ वार्तालाप नवम्बर (1936) एक अपूर्ण अभिलेख)

निकोलाई ओस्त्रोव्स्की

त्रेगुबः आपके स्वप्न किस प्रकार के होते हैं?

ओस्त्रोव्स्कीः मैं अपने सपनों पर यदि दस मोटे-मोटे ग्रन्थ भी लिख दूँ, तो भी वे समाप्त न होंगे। मैं हर वक़्त स्वप्न देखता रहता हूँ, सुबह से शाम तक, हाँ, और रात को भी। किस चीज़ के? यह कहना मुश्किल है। यह कोई फ़िज़ूल-सा सपना नहीं जो दिन प्रतिदिन और एक महीने के बाद दूसरे महीने तक चलता रहे। वह हर वक़्त बदलता रहता है – सूर्योदय की तरह, या सूर्यास्त की तरह ... मैं समझता हूँ कि स्वप्न देखना जीवन में फिर से ताज़गी लाने का अद्‌भुत साधन है। जब मेरी बहुत-सी ताक़त खर्च हो जाती है, और मैं एक निःशेष बैटरी की तरह कमज़ोर महसूस करने लगता हूँ तब मुझे अपने में नयी ताक़त पैदा करने के साध्न ढूँढने पड़ते हैं, कोई ऐसी चीज़ जिससे मेरी ताक़त फिर से जुट सके। मेरे स्वप्न – चाहे वे कभी कभी कपोल-कल्पित जान पड़ें पर वे सदा इस धरती के होते हैं, इस जीवन के होते हैं। मैं असम्भव के सपने कभी नहीं देखता।

...मैं अपने देश की, अपने जनतन्त्र की शक्ति को कई गुना बढ़ा सकूँ – यह इच्छा कभी भी इतनी तीव्र नहीं होती जितनी कि स्वप्न देखते समय। यदि इनसान पूँजीपतियों की सारी की सारी दौलत, अरबों रूबल ले ले, उनकी सभी मशीनें – वह सब सामान जो अनुपयोगी और निरर्थक उनके हाथों में पड़ा हुआ है; यदि इनसान उनके मज़दूरों को ला सके, भूखे, परिश्रम से थके-हारे, दरिद्रता और यातना की अन्तिम सीमा तक पहुँचे हुए – यदि इनसान उन्हें यहाँ ला सके और उन्हें काम और नया जीवन दे सके। और मेरी आँखों के सामने एक जहाज आ जाता है, जो उन्हें यहाँ हमारे पास ला रहा है। उनसे आनन्दभरी भेंट मेरी आँखों के सामने आती है। लोग आज़ाद और प्रसन्न हैं।

सपनों की कोई सीमा नहीं होती... अक्सर मेरे मस्तिष्क के किसी कोने में एक छोटी-सी चिनगारी जल उठती है, और मेरी आँखों के सामने एक दृश्य बढ़ने और फैलने लगता है और एक विजयपूर्ण प्रयाण के दृश्य में परिणत हो जाता है। ऐसे सपनों से मुझे बहुत लाभ होता है। प्रेम, निजी सुख – मेरे सपनों में इनके लिए बहुत कम स्थान है। आदमी अपने से कभी झूठ नहीं बोलता। उस खुशी से बढ़कर, जो एक सैनिक को मिलती है, मेरे लिए कोई और खुशी नहीं जो बिल्कुल निजी है, वह अल्पजीवी है। उसकी संभावनाएँ कभी इतनी विशाल नहीं हो पातीं, जितनी कि उस चीज़ की जो समूचे समाज से सम्बन्ध रखती है। मैं इसे अपने जीवन का सबसे गौरवमय कर्तव्य समझता हूँ, सबसे गौरवमय लक्ष्य, कि मनुष्य के उज्ज्वल भविष्य के लिए जो संघर्ष चल रहा है उसमें मैं एक सैनिक बनूँ, और वह भी सबसे छोटा सैनिक नहीं। मेरा कर्तव्य है कि मैं उस संघर्ष में नायक के स्थान पर लड़ूँ। मैं अपने सपनों में कभी भी केवल हुक्म बजा लेनेवाले के रूप में अपने को नहीं देखता।

मैं इन सपनों को कभी भी शब्दबद्ध नहीं कर पाऊँगा। इन अद्‌भुत, हृदयग्राही विचारों को ठीक तरह से व्यक्त करने की क्षमता किसी में भी नहीं है।

कभी-कभी, कोई मूढ़मति मेरे सामने इस क़िस्म की शिकायत करने लगता है कि उसकी पत्नी किसी दूसरे को प्रेम करने लगी है, और अब उसके लिए जीवन निस्सार हो गया है। इस तरह की बकवास। सारा वक़्त उसके मुँह से लार टपकती रहती है। और मैं दिल में सोचता हूँ : अगर मुझे वह सब कुछ मिला होता जो इसके पास है–स्वास्थ्य, हिल-डुल सकने वाले हाथ-पाँव, इस असीम संसार में घूम-फिर सकने की क्षमता, (यह एक ख़तरनाक स्वप्न है और मैं इसे देखने से अपने को रोके रखता हूँ)–यदि मेरे पास वह सब कुछ होता तो मैं क्या करता? अपनी कल्पना में मैं उठ खड़ा होता हूँ, जवान, स्वस्थ, छाती ताने हुए मैं कपड़े पहनता हूँ और बाहर छज्जे पर आ खड़ा होता हूँ, और जीवन-प्रवाह मेरे सामने बह रहा होता है... फिर क्या? मैं चलूँगा नहीं, मैं तो दौड़ूँगा–दौड़े बग़ैर मैं रह नहीं सकता। मैं रेलगाड़ी के साथ-साथ, सारा रास्ता भागता हुआ शायद मास्को जाऊँगा, लिखाचोव मोटर-कारख़ाने में जाऊँगा और सीधे अपने साथियों के पास पहुचूँगा, और जाते ही एक भट्‌ठी का मुँह खोल दूँगा, ताकि जल्दी से जल्दी कोयले की बास सूँघ सकूँ, और भट्‌ठी को कोयले से भर सकूँ। मैं साठ-सत्तर दिन काम एक दिन में करूँगा। मैं इतना काम करूँगा कि कोई विश्वास भी नहीं कर पायेगा। मेरे दिल में ज़िन्दगी की भूख होगी, बिल्कुल पागलों की सी। और अपने शरीर को थकाने के लिए मुझे बहुत काम करना पड़ेगा, बहुत शक्ति लगानी पड़ेगी। गतिहीनता से, नौ बरस की गतिहीनता से छुटकारा पाने के बाद मैं काम पर यों जुट जाऊँगा कि छोड़ूँगा ही नहीं जब तक कि जी न भर जाय।

ये विचार मेरे मन में उठते हैं, जब कोई बेवकूफ़, लार टपकाता हुआ, मेरे सामने आकर रोता है कि उसके सामने जीवन का कोई लक्ष्य नहीं। अगर मेरे पास वह सब कुछ होता जो उसके पास है तो अगर मेरी पत्नी, एक बार नहीं, पचास बार भी मुझे धोखा देगी, तो भी मैं परवाह नहीं करूँगा। सदा मन में यही भावना रहेगी कि जीवन एक विलक्षण चमत्कार है।

हमारे देश के हर व्यक्ति का यह पावन कर्तव्य है कि वह साहसी वीर बने। हमारे देश में हर इनसान में योग्यता है, बुद्धि है–सिवाय

निठल्ले और आलसी लोगों के। वे योग्य बनना चाहते ही नहीं। शून्य में से तो केवल शून्य ही निकलता है। पत्थर में से जल नहीं निकलेगा। जो ज्वाला बनकर जलता नहीं वह धुएँ में ही अपने आपको नष्ट कर देता है। यह शाश्वत सत्य है। हे जीवन की ज्वलन्त शिखा, मैं तुझे प्रणाम करता हूँ!

यह कभी मत सोचना कि मैं दुःखी हूँ, या उदास हूँ। मैं यह कभी भी नहीं था। जब तक जीवन में मेरी जीत नहीं हुई, मेरा संकल्प कभी नहीं टूटा–मैंने कभी हार नहीं मानी। मुझे मालूम तो नहीं था कि ज़िन्दगी यह रुख़ पकड़ेगी। मैं युवा अध्ययन-मण्डल का काम करते हुए बहुत खुश रहा करता था। तब मेरे शरीर में ताक़त थी। मैं तीन तीन घण्टे तक लगातार बोल सकता था। जितनी देर मैं बोलता रहता, सुननेवाले बीस युवकों में से एक भी न हिलता था, ऊँची साँस तक लेने की आवाज़ न आती थी। अग्नि-दीक्षा आज भी मौजूद है, और यह ज्ञान भी कि जीवन का कोई लक्ष्य है, कि मेरी ज़रूरत कहीं पर है। यदि मनुष्य सैकड़ों को नहीं सिखा सकता तो पाँच को ही सिखा दे। एक को ही सिखा दे, और यह छोटी चीज़ नहीं, पाँच बोल्शेविक तैयार करना मामूली बात नहीं।

पर जब इनसान यह महसूस करे कि उसमें काम करने की इच्छा ही नहीं रही, तब उसकी स्थिति चिन्ताजनक समझनी चाहिए।

अहंवादी सबसे पहले गिरता है। वह केवल अपने में और अपने लिए जीता है। और एक बार उसके अहं को चोट लग जाय, तो उसके जीवन के आधार टूट जाते हैं। उसे अपने सामने अहं तथा मौत की भयावनी काली रात के अलावा कुछ नज़र नहीं आता। इसके विपरीत, जो मनुष्य अपने को समाज के जीवन में खपा देता है– उसको गिराना आसान नहीं। उसे मारने से पहले तुम्हें उसके समाज को, उसके देश को तबाहोबरबाद करना होगा। मैं ज़ख़्मी हो गया हूँ, पर मेरी सैनिकों की टुकड़ी जीवित है और उसी तरह काम कर रही है। और युद्ध-भूमि में पड़ा हुआ मृतप्राय सैनिक, जब अपने साथियों की विजयध्वनि सुनता है तो उसका हृदय एक पूर्णता से, गहरे सन्तोष से भर उठता है। एक सैनिक के लिए इससे भयंकर कोई स्मृति नहीं कि उसने कभी ग़द्दारी की थी, अपनी टुकड़ी को तबाह करवाया था। मरते दम तक वह इस विश्वासघात की आग में जलता रहेगा।

कम्युनिज़्म में भी व्यक्तिगत स्तर पर भ्रम, क्लेश इत्यादि होंगे। पर लोगों का जीवन संकीर्ण व्यक्तिगत दायरे में फँसा नहीं रहेगा। जीवन में सौन्दर्य का आविर्भाव होगा।

हमारे साथियों की वीरता क्षणभंगुर वीरता नहीं होती। व्यक्तिगत दुःख उनके लिए गौण है। जब मनुष्य संघर्ष करना छोड़ देता है तो उसके जीवन में दुःख आने लगता है।

जीवन का प्रत्येक दिन मेरे लिए यातना और पीड़ा के विरुद्ध विकट संघर्ष का दिन होता है। मेरे जीवन में दस साल से यही चल रहा है। जब तुम मेरे होंठों पर मुस्कान देखते हो, तो यह मुस्कान सच्ची और सच्चे सुख की सूचक होती है। इन सब यातनाओं के होते हुए भी मैं खुश हूँ और इस खुशी का स्रोत है उन नित नये महान कामों की सम्पन्नता जो मेरे देश में हो रहे हैं। यातना और पीड़ा पर विजय पा लेने से बढ़कर कोई सुख नहीं। इसका यह अर्थ नहीं कि मनुष्य केवल जीता भर रहे, साँस भर लेता रहे (हालाँकि इसकी भी उपेक्षा नहीं की जा सकती)। मेरा अभिप्राय संघर्ष और विजय से है।

मैं जब मास्को से यहाँ आया तो थका हुआ और बीमार था। मैं बहुत परिश्रम करता रहा था। पर मेरी बीमारी से मेरे ओज की क्षति नहीं हो पायी। बल्कि इससे वह एक जगह सिमटकर इकट्ठा हो गया है। मैं अपने आपसे कहा करता हूँ: "याद रखो, संभव है तुम कल मर जाओ, जब तक तुम्हारे पास समय है, काम करते जाओ!"

और मैं काम में जुट गया। मेरे आस-पास के लोग हैरान रह गये। मैं बड़े उत्साह और उल्लास से काम करता था।

मैं ऐसे आदमी से घृणा करता हूँ जो उँगली दुःखने पर छटपटाने लगता है, जिसके लिए पत्नी की सनक क्रान्ति से अधिक महत्व रखती है, जो ओछी ईर्ष्या में घर की खिड़कियाँ और प्लेटें तक तोड़ने लगता है। या वह कवि जो हर क्षण ठंडी साँसें भरता हुआ व्याकुल रहता है, कुछ लिख पाने के लिए विषय ढूँढ़ता-फिरता है, और जब कभी विषय मिल जाता है तो लिख नहीं पाता क्योंकि उसका मूड ठीक नहीं, या उसे जुकाम हो गया है और नाक चल रही है। उस आदमी की तरह जो गले में मफ़लर लपेटे डरता-काँपता घर से बाहर नहीं निकलता कि कहीं हवा न लग जाय। और उसे थोड़ी-सी हरारत हो जाय तो डर से उसका खून सूखने लगता है, वह बिलखने लगता है, और अपना वसीयतनामा लिखने बैठ जाता है। इतना डरो नहीं, साथी! अपने जुकाम के बारे में सोचना छोड़ दो। काम करने लगोगे तो तुम्हारा जुकाम ठीक हो जायेगा।

और उस लेखक से भी घृणा करता हूँ जो एक बैल की तरह हृष्ट-पुष्ट है। पर पिछले तीन साल से अपनी किसी अपूर्ण पुस्तक में से एक टुकड़ा बार बार अपने श्रोताओं को सुना-सुनाकर पैसे कमा रहा है। हर बार पढ़ने के उसे दो सौ पचास रूबल मिल जाते हैं। "अब भी दुनिया में ख़ासे बेवकूफ़ मौजूद हैं," वह दिल ही दिल में कहता और हँसता है, "मुझे अगले छः साल तक एक शब्द भी लिखने की ज़रूरत नहीं।" उसके पास लिखने के लिए वक़्त ही नहीं। वह खाने, सोने और औरतों के पीछे भागने में व्यस्त है – कैसी भी औरतें हों, सुन्दर या असुन्दर, सत्तरह बरस की हों या सत्तर बरस की। स्वास्थ्य – हाँ, स्वास्थ्य का वह धनी है; पर उसके हृदय में कोई चिनगारी नहीं।

मैं कई शानदार वक्ताओं को जानता हूँ। वे अपने शब्दों से अद्भुत चित्र खींच सकते हैं, और अपने श्रोताओं को सदाचार, और नेकी से रहने का उपदेश देते हैं, पर उनके जीवन में ये गुण नहीं होते। मंच पर खड़े होकर वे अपने श्रोताओं को बड़े बड़े काम करने का सदुपदेश देते हैं, पर उनका अपना जीवन घृणित और कुत्सित होता है। आप उस चोर की कल्पना करें जो ईमानदारी की शिक्षा देता है, जो ऊँची आवाज़ में चिल्ला चिल्लाकर कहता है कि चोरी करना पाप है – और जब वह बोल रहा होता है, अपने श्रोताओं को ध्यान से देखता भी रहता है कि किसकी जेब वह सबसे आसानी से काट सकता है। या उस भगोड़े को लीजिये, जो खुद युद्ध-क्षेत्र से भागकर आया है, और सच्चे सैनिकों को स्वेच्छा से आगे बढ़ने का उपदेश दे रहा है। हमारे सैनिकों को उस जैसों के साथ कोई हमदर्दी नहीं।

अगर वह उन्हें कहीं मिल जाय, तो मार मारकर उसे अधमरा कर देंगे। और हमारे बीच ऐसे लेखक भी मौजूद हैं जो कहते कुछ हैं और करते कुछ और। यह चीज़ लेखक के धन्धे से मेल नहीं खाती।

लेखक का दुर्भाग्य तब शुरू होता है जब उसके विचार, उत्कृष्ट और सजीव, उसकी क़लम पर नहीं आ पाते; उसके दिल में तो आग की ज्वाला होती है, पर जब उसे काग़ज पर रखता है, तो वह अधबुझी, ठण्डी राख होती है। जिस सामग्री पर लेखक काम करता है, उसको अपनी आवश्यकतानुसार गढ़ना इतना कठिन होता है कि उससे बढ़कर कठिन काम दुनिया में न होगा।

मैं अपने नये चरित्रों, 'तूफ़ान के जाये' के युवकों और युवतियों से प्यार करने लगा हूँ: राइमन्द से, बेपरवाह आन्द्रेई से, उस मितभाषी, नाजुक युवक ष्पेनीचेक से, उस गोल-मटोल प्यारी-सी ओलेस्या, और सुन्दर सारा से – जो बाद में इतनी शानदार क्रान्तिकारी निकली। मुझे उन सब से प्यार है। मैं हर वक़्त उनके बारे में सोचता रहता हूं और उनमें से कई एक का भविष्य तो अभी से मेरे सामने स्पष्ट होने लगा है।

ओलेस्या फ़ौज के कमाण्डर शाबेल को, जो उसके दिल में आन्द्रेई का स्थान लेने लगेगा, ब्याह करने का वचन दे देगी। पर वह उससे कहेगी: "मैं जंग के बाद तुम्हारी हो जाऊँगी, पर पहले नहीं।" वह एक रोज़ शराब पीकर आयेगा और उसके विश्वास को तोड़ देगा। इसे ओलेस्या कभी क्षमा नहीं करेगी। और फिर उसके सामने आन्द्रेई आ खड़ा होगा – लड़ाई में से अकस्मात् बचकर आया हुआ, जहाँ ओलेस्या को खो बैठने की निराशा में वह जान-बूझकर मरने के लिए तैयार होकर गया था। और ये दोनों जीवन में एक साथ रहेंगे। ष्पेनीचेक की कहानी असाधरण और अत्यन्त रोचक होगी। लड़ाई में उसकी एक टाँग कट जायेगी और वह अपनी टुकड़ी पर बोझ बन जायेगा। वह सोचेगा कि जब मैं लड़ नहीं सकता तो जीवन में मैं किसी काम का नहीं रहा। फिर, वसन्त ऋतु में, उस चक्की में जहाँ वह काम करता है, फ्रान्सीस्का उसे मिलेगी जो उसको अपने प्रेमपूर्ण हृदय से लगाकर उसे अपना प्यार देगी, पर वह ज़्यादा देर तक उसके साथ नहीं रह पायेगी। उसके नारी-गर्व को चोट लगेगी जब लोग अनुकम्पा भरी आँखों से उसे और उसके प्रेमी की ओर देखेंगे। वह उसे छोड़ जायेगी। ष्पेनीचेक अन्तःप्रेरणावश अपनी सैनिक टुकड़ी की ओर जायेगा। वह अपने साथी सैनिकों से याचना करेगा कि मुझे फिर से साथ मिला लो, पर वे केवल हँस देंगे। वे कहेंगे: "जाओ और बत्तखें पालो। हमें तो लड़ना है।" फिर भी वह किसी तरह उन्हें मना लेगा। और कुछ नहीं तो वह उनका बावर्ची ही बनकर रहेगा। उसका पेशा भी तो पेस्ट्री बनाना है। वे उसे अपने रक्षाशिविर में ले जायेंगे, और वहाँ वह उनका खाना बनाने लगेगा, और उन्हें स्वादिष्ट मिठाइयाँ बना बनाकर खिलायेगा, जैसी कि उन्होंने कभी पहले नहीं खायीं। वह सर्वप्रिय हो उठेगा। पर उसका दिल तो एक सैनिक का दिल है। वह इस क़िस्म के जीवन से क्योंकर सन्तुष्ट होगा। वह उनकी मशीनगनें साफ़ करने लगेगा, और उनके पुर्ज़े अलग करने और जोड़ने में मदद देगा। मशीनगनों को वह इतनी अच्छी तरह से जान जायेगा कि वह आंखें बन्द करके उन्हें खोल सकेगा और उनके पुर्जे जोड़ सकेगा। और ज्यों-ज्यों वक़्त गुज़रता है वह मशीनगन चलाने लगता है, और ऐसी कि उससे शत्रु का दिल दहलने लगता है। लोग उस लंगड़े मशीनगन चालक के गीत गाने लगते हैं जो किसी से नहीं डरता और जो दुश्मन का सफ़ाया किये बिना नहीं रहता। दो बार उसे पदकों से सम्मानित किया जाता है। अब वह बैसखियों पर उचकता हुआ नहीं चलता। उसके लिए एक लकड़ी की टांग बना दी गयी है। उसे फिर फ्रान्सीस्का मिलती है, और विजय के गौरव में वह फिर उसके पास आ जाती है। यह हैं मेरे चरित्रों के भाग्य और उनके आपसी सम्बन्धें की रूपरेखा

डायरी? नहीं, मैं डायरी नहीं रख सकता। डायरी में सब कुछ होना चाहिए, प्रेम की स्फूर्ति तक, गुप्त से गुप्त सपनों तक। दरअसल यह अपने आपसे वार्तालाप के समान है, जो स्पष्ट और सच्चा हो। इसके लिए बड़े साहस की ज़रूरत है। इस ख़्याल से लिखना कि वह बाद में कभी छपेगी, इतिहास बनेगी, यह मेरी नज़रों में घृणित चीज़ है। वह डायरी नहीं होगी, एक साहित्यिक कृति होगी। मेरे लिए डायरी रखना अनिवार्य हो जाता यदि मैं स्वय डायरी लिख पाता। पर मैं कदापि अपने गहरे आन्तरिक भावों को किसी दूसरे के हाथ से नहीं लिखवा सकता (ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं कर सकता)। कई बातें ऐसी होती हैं जिन्हें स्वयं, अपने लिए भी स्वीकार करना कठिन होता है। कई ऐसी भावनाएँ होती हैं जिन्हें निरावरण नहीं किया जा सकता, जैसे हम लोगों के सामने नंगे, वस्त्रहीन होकर नहीं आ सकते। शायद इस नग्नता में सौन्दर्य हो, पर ऐसा करना असंभव होता है। अनेक इच्छाएँ और भावनाएं दिल की गहराइयों में रहती हैं, जिन्हें डायरी को भी नहीं सौंपा जा सकता। परन्तु – यदि मनुष्य के आन्तरिक संसार और इर्द-गिर्द की दुनिया का आपस में विरोध बहुत बढ़ जाय तो उसे चाहिए कि वह रुक जाय और अपने आपसे पूछे: यदि मैं अपने विचारों को अपने सामने भी स्वीकार करने में लज्जित महसूस करता हूँ, तो मैं आदमी किस प्रकार का हूँ?

मनुष्य के जीवन में कोई भी बात इतनी लज्जाजनक न होनी चाहिए कि वह उसे लिख तक न सके। ऐसी डायरी बड़ी ज़रूरी चीज़ है। यह मनुष्य के अपनें चरित्र-निर्माण में बड़ी सहायक होती है। फूर्मानोव की डायरी तथा उसके रेखाचित्र बहुमुल्य सामग्री है।*

*दमीत्री फूर्मानोव का प्रसिद्ध उपन्यास 'चपायेव' बहुत हद तक उन डायरियों पर आधारित है जिनमें फूर्मानोव ने गृहयुद्ध के काल में अपने विचार, प्रभाव तथा घटनाओं को नोट कर रखा था।